

“उच्च शिक्षारत विद्यार्थियों के बदलते मूल्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

रेनू गुप्ता

<https://doi.org/10.61410/had.v31i3.342>

शोध-सार

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना तथा जीवन मूल्यों के विकास का प्रमुख आधार रहा है। शिक्षा की प्रथम पाठशाला परिवार होता है जहाँ बच्चे के समाजीकरण का आरम्भ होता है। उच्च शिक्षा केवल ज्ञान और रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के विचारों दृष्टिकोण, सामाजिक व्यवहार एवं सम्बन्धों की दिशा प्रदान करती है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षारत छात्र-छात्राओं के मूल्यों में व्यापक परिवर्तन देखा जा सकता है। वैश्वीकरण, नगरीकरण, तकनीकी विकास, आधुनिक संचार तंत्रों, बाजारवाद रोजगार की प्रतिस्पर्धा तथा पारिवारिक संरचना की विघटित व्यवस्था ने अब छात्र-छात्राओं की सोच का तरीका और जीवन-शैली को अवश्य ही प्रभावित किया है। नई पीढ़ी जो इण्टरनेट एवं सोशलमीडिया से इतना प्रभावित है कि उसे नये टर्म जोन जी (जनरेशन पेड) के नाम से ख्याति मिल रही है। नई पीढ़ी अब परम्परागत मूल्यों के साथ-साथ आधुनिक एवं व्यक्तिवादी मूल्यों के विकास में भी अपना समर्थन दिया है।

शब्द संकेत – परम्परागत मूल्य, संरक्षण, उपयोगिता, उत्तरदायित्व, वैश्विक चुनौती, भौतिकवाद, लैंगिक समानता, बौद्धिक मूल्य, उच्च शिक्षा, मूल्य

भूमिका –

शिक्षा व्यक्ति में प्रतिबद्धता और सामाजिकता को विकसित करती है, शिक्षा की प्रतिबद्धता, सदजीवन के साथ-साथ अच्छे समाज, राष्ट्र तथा मानवता के लिए भी है। यदि शिक्षा में प्रतिबद्धता नहीं होगी तो वह मूल्यों का संरक्षण नहीं कर सकेगी। राष्ट्रीय हितों एवं मानवता का भी संवर्धन नहीं कर सकेगी। शिक्षा यदि जीवन में सामाजिकता पैदा नहीं कर सकती तो उसकी कोई सामाजिक उपयोगिता नहीं है। मूल्य वे मान्यताएँ आदर्श एवं विश्वास हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को उचित-अनुचित वांछनीय अवांछनीय तथा अच्छा बुरा निर्धारित करने में सहायक होते हैं। ईमानदारी अनुशासन, सहयोग, त्याग, समानता, स्वतंत्रता न्याय, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व इत्यादि सामाजिक मूल्यों के प्रमुख तत्व कहे जाते हैं। व्यक्ति के मूल्य उसके परिवार, शिक्षा, सामाजिक परिवेश, संस्कृति आर्थिक स्थिति तथा अनुभवों से निर्मित होते हैं।

उच्च शिक्षा (महाविद्यालय, विश्वविद्यालय) केन्द्र छात्र-छात्राओं को विभिन्न विचारधाराओं, संस्कृति के साथ-साथ सामाजिक वास्तविकता का भी ज्ञान कराती है। विद्यार्थियों को स्वतंत्रचिन्तन, तार्किक विश्लेषण तथा प्रश्न करने का भी अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनके मन में पनप रही जिज्ञासा को शांत करने का अवसर प्राप्त होता है। इससे उनके दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आता है। छात्र-छात्राएँ जाति, धर्म, क्षेत्र, लिंग इत्यादि सामाजिक विभाजनकारी तथ्यों के प्रति अधिक तर्क आधारित दृष्टिकोण के साथ धार दे सकते हैं।

- असि0 प्रो0-समाजशास्त्र विभाग, डी0एस0एन0 पी0जी0कालेज, उन्नाव (उ0प्र0)

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं में मूल्य परिवर्तन का स्वरूप एवं लोकतांत्रिक चेतना के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं जबकि कुछ विद्यार्थी उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्द्धा और भौतिक सफलता को अधिक महत्व के पक्ष में दिखाई पड़ते हैं। परम्परागत समाज में सामूहिकता, परिवार एवं सामाजिक अपेक्षाओं को भी महत्व दिया जाता है। वर्तमान परिवेश में उच्च शिक्षारत छात्र-छात्राओं अपने व्यक्तिगत निर्णय, स्वतंत्रता एवं आत्मविकास के समर्थक हैं। वह अपने आजीविका साधनों, जीवनसाथी, जीवन शैली एवं भविष्य के प्रति निर्णयों में स्वयं की राय को ही प्राथमिकता देते हैं।

मूल्यों में परिवर्तन को संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकाकी परिवारों में वृद्धि एवं शिक्षा के प्रति आये बदलाव के कारण अब अन्तःवासी होने से पारिवारिक सम्बन्धों आयी शिथिलता ने इसके स्वरूप में परिवर्तन देखा जा सकता है। शिक्षारत छात्र-छात्राओं में परिवार के प्रति सम्मान तो दिखाई पड़ता है, परन्तु पारम्परिक अनुशासन और निर्णय के प्रति जवाबदेही में भी कमी आयी है। पीढ़ियों के बीच विचारों का अन्तर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आज के भौतिकवादी परिवेश में क्या हम अपने विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दे पा रहे हैं जो उनके भीतर जिज्ञासा पैदा कर सके। शील का निर्माण कर सके, इनके बिना हम उन्हें अच्छा नागरिक नहीं बना सकते, उनके भीतर सामाजिक प्रतिबद्धता पैदा करने की भी आवश्यकता है। देश के प्रति उनके सोंच को सकारात्मक रूप दिया जा सके, उनके मन में मानवता के प्रति प्रेम भाव पैदा किया जाना चाहिए, वैश्विक चुनौतियों के प्रति हम उन्हें तैयार कर सकें। नीतिपरक जीवन जीने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। जिससे वह अपने परिवार का भरण-भोषण कर सकें। ज्ञान प्राप्त करने हेतु नये क्षितिजों का लाभ प्राप्त कर सकें ताकि उनमें कौशल विकास सम्भव हो। इन सभी बातों को हम शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर ही कर सकते हैं।

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में लैंगिक असमानता, महिला स्वतंत्रता और समान अवसरों की चेतना को शक्ति प्रदान की है। शिक्षित युवा पारम्परिक लैंगिक भूमिकाओं पर प्रश्न उठा रहे हैं तथा शिक्षा, रोजगार और निर्णय प्रक्रिया में समान भागीदारी का समर्थन भी किया जा रहा है। आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए रोजगार मात्र आजीविका का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सशक्तिकरण एवं सामाजिक पहचान स्थापित करने का माध्यम भी है। सरकारी नौकरी, निजीक्षेत्र, उद्यमिता, तकनीकी एवं वैश्विक रोजगार के अवसर के प्रति भी आकर्षण में वृद्धि हुई है। शैक्षिक क्षेत्र में प्रतियोगिता के कारण सफलता और उपलब्धि का महत्व भी बढ़ा है।

आज के भौतिकवादी परिवेश में बाजारवाद और डिजिटल माध्यमों के विस्तार के फलस्वरूप उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं की मनोवृत्ति को प्रभावित किया है। आधुनिक जीवन शैली, तकनीकी उपकरण यात्रा और सुविधापूर्ण जीवन के प्रति भी आकर्षण में वृद्धि हुई है। इसी कारण अब सामाजिक प्रतिष्ठा को आर्थिक उपलब्धि तथा उपयोग संस्कृति से जोड़कर देखा जा रहा है। उच्च शिक्षा का एक सकारात्मक प्रभाव उच्च शिक्षारत छात्र-छात्राओं के वैज्ञानिक सोंच एवं तार्किक चिन्तन के रूप में दिखाई पड़ता है। आज का युवा वर्ग परम्परागत मान्यताओं के तर्क और प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अंधविश्वास रूढ़ियों और सामाजिक भेदभाव के प्रति उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण इसी परिवर्तन का एक भाग है।

आज का युग वर्ग लोकतंत्र, अभिव्यक्त की स्वतंत्रता मानवाधिकार एवं सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर बड़ी बेवाकी से अपनी राय व्यक्त करता है तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था को

जनमत निर्माण की प्रक्रिया से सशक्त बनाने का भी प्रयास कर रहा है। सोशलमीडिया और डिजिटल तकनीक ने छात्र-छात्राओं के मूल्य निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित किया है। इसके माध्यम से सामाजिक सम्बन्धों से संवाद के माध्यम में भी परिवर्तन आया है। वी ईमानदारी कर्तव्य निष्ठा, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति भी उसकी मानसिकता में भी अब परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। छात्र छात्राएँ अब नैतिकता को मात्र परम्परा के आधार पर न स्वीकार कर तर्क और विवेक के आधार पर समझने का प्रयास करता है।

उच्च शिक्षारत विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति आये परिवर्तन के पीछे विभिन्न कारकों भूमिका रही है जिसमें-वैश्वीकरण, उदारीकरण, उच्च शिक्षा का विस्तार, औद्योगिकरण, नगरीकरण, संचार तकनीक, सोशल मीडिया, इण्टरनेट का सुलभ होना, पारिवारिक संरचना में बदलाव, रोजगार एवं प्रतियोगिता में वृद्धि, उपभोक्तावाद, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव, आर्थिक परिवर्तन इत्यादि, मूल्य परिवर्तन ने उच्च शिक्षारत विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिन्तन वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक समानता, मानवाधिकार की चेतना, लोकतांत्रिक भावना का विकास तथा सामाजिक गतिशीलता ने अधिक प्रभावित किया है। जीवन में चयन की वृद्धि सामाजिक रूढ़ियों एवं भेदभाव के प्रति सकारात्मक सोच के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में भी परम्परा एवं मूल्यों का आधार भी तार्किक एवं वैज्ञानिक था, कालांतर में अंध विश्वास की धूल और आधुनिकता के प्रभाव ने सभी प्राचीन परम्पराओं का अर्थहीन कर दिया है, जो कभी हमारी सामाजिक जीवन की रीढ़ की हड्डी हुआ करती थी। परिवर्तन एक शाश्वत सत्य है, वास्तव में सामाजिक परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता। भारतीय समाज भी इसी परिवर्तन का एक भाग है, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इस अनियंत्रित परिवर्तन को कैसे रोका जाय, आज आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को अतीत और वर्तमान के बीच शिक्षा के माध्यम से समन्वय स्थापित करके ही इसे संतुलित बनाया जा सकता है।

मूल्य परिवर्तन का एक पक्ष यह भी है। अत्यधिक व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, आर्थिक सफलता की तीव्र आकांक्षा, सामाजिक अलगाव, तनाव, पारिवारिक अलगाव एवं प्रतिस्पर्धात्मक दबाव की समस्या आज उच्च शिक्षारत विद्यार्थियों के जीवन को भी प्रभावित करती है। आज संचार साधनों के अत्यधिक उपयोग वास्तविक सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक न्याय को भी कमजोर करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र छात्राएँ भी बदलते सामाजिक मूल्य, सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। यह परिवर्तन मात्र परम्परागत मूल्यों के समाप्त होने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि पुराने और नये मूल्यों के बीच निरन्तर समायोजन की प्रक्रिया है। स्वतंत्रता, समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक न्याय और लोकतांत्रिक चेतना जैसे आधुनिक मूल्य सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। वहीं परिवार सहयोग, सहिष्णुता, ईमानदारी, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदना जैसे मूल्य को बनाये रखना भी आवश्यक है।

अतः उच्च शिक्षा का उद्देश्य मात्र रोजगारोन्मुखी ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि ऐसा संतुलित व्यक्तित्व विकसित करना होना चाहिए? जो आधुनिकता को स्वीकार करते हुए माननीय एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता बनी रहनी चाहिए। यह संतुलन उच्च शिक्षा छात्र-छात्राओं के मूल्य परिवर्तन को सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में परिवर्तन कर सकता है। शिक्षा का कार्य विद्यार्थियों के मस्तिष्क को शुद्ध नैतिक और बौद्धिक मूल्यों का अनुभव कर समाज में मूल्यों की प्रेरणा

को जीवन में उतार सके। मूल्यों के द्वारा ही हम एक आदर्श समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं।

शिक्षा को प्रत्येक युग में सम्मान मिला है। वह विकास का आधार है, आज के वैश्वीकरण के युग में ज्ञान एक शस्त्र है। भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों, मूल्यों और शिक्षा चिन्तन को समझना केवल अकादमिक अपरिहार्यता ही नहीं है। अपितु समाज में शिक्षा की व्यापक और उदार भूमिका के साथ मूल्यों को समझाना भी आवश्यक है।

संदर्भ सूची –

8. श्रीनिवास, एम0एन0 ; आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2020
9. दुबे, एस0सी0; मॉडर्नाइजेशन एण्ड डबलपमेन्ट: दशर्च फार अल्टर्नेटिव पैराडाइमस विकास पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली – 1998
10. शर्मा रामनाथ; शिक्षा और समाज, आर.लाल बुक डिपो मेरठ,।
11. योगेन्द्र सिंह ; भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशनस नई दिल्ली-1986
12. अग्रवाल पीठ – हायर एजुकेशन इन इण्डिया : द नीड फार चेंज, इण्डियन कौंसिल फार रिसर्च आन इण्टरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशन्स, नई दिल्ली-2006
13. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार नई दिल्ली-2020
14. शर्मा गोविन्द प्रसाद ; शिक्षा और समाज राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत-2022